SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

लोक साहित्य में धर्म एवं आध्यात्मिक की महत्ता

श्रीमती रजनी गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (शिक्षाशास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

लोक साहित्य किसी क्षेत्र विशेष में बंधा न रहकर संपूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी होता है। यह लोक जीवन की बहुआयामी अभिव्यक्ति का आईना हैं यह किसी भी राष्ट्र की बेशकीमती धरोहर है। जीवन के सुख दुख का वर्णन लोक साहित्य में नजर आता है। लोक साहित्य हमारी अनुभूतियों को उभारने में सक्षम है। जन जीवन के रंग तरंग की सुगंधित लोक अनुभव लोक साहित्य मे संभव है।

लोक साहित्य लोकमानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। शिष्ट साहित्य की तरह यह कृत्रिम नहीं होता। यह अभिव्यक्ति शिष्ट साहित्य की तरह लिखित नहीं होती और न ही इसका कोई एक रचयिता होता है। यह मौखिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, दूसरी से तीसरी पीढ़ी तक पहुंचती है और इसी तरह आगे बढ़ती रहती है।

बीज शब्द

लोक साहित्य, लोक मानस, जनजीवन, पीढ़ी आदि।

शोध विस्तार

"लोकजीवन में लोकसाहित्य का अत्यन्त ही महत्व है। इसके संरक्षण एवं अनुशीलन के द्वारा साहित्य का विकास किया जा सकता है। साहित्य में धर्म, समाज, सदाचार आदि बातों का समावेश मिलता है। इसके अलावा साहित्य के द्वारा स्थानीय इतिहास एवं भूगोल-संबंधी जानकारी की प्राप्ति होती है। लोकसाहित्य जनता के हृदय का उद्गार है। लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनृत्य इत्यादि ये भी लोकसाहित्य के अंग माने गये हैं। इसके अलावा लोक-

सुभाषित, जिसके अन्तर्गत बच्चों के गीत, मुहावरे, लोकोक्तियां, पहेलियां इत्यादि आते हैं। जिनका व्यवहार प्रतिदिन लोक-जनजीवन में समान रूप से किया जाता है। लोकसाहित्य के महत्व को हम साधारणतः छः भागों में विभक्त कर सकते हैं। ऐतिहासिक महत्व-ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाय, तो लोकसाहित्य में इतिहास की प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है। मुगलों के शासनकाल में किस प्रकार देश में अशांति एवं दुर्व्यवस्था थी, इसका चित्रण अनेक लोकगीतों में पाया जाता है।

लोक साहित्य लोक का दर्पण है। लोक की समस्त भावराशि लोक साहित्य में दर्ज रहती है। लोक साहित्य व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं रहता बल्कि इसका प्रवाह समूचे समाज में व्याप्त होता है। इसीलिए लोक साहित्य को सामाजिक अभिव्यक्ति भी कहा जाता है जिसमें विशिष्ट वर्ग के स्थान पर सामान्य वर्ग को केंद्र का स्थान प्राप्त है। यह सामान्य जन द्वारा सृजित, पोषित और संवाहित साहित्य है।

लोक साहित्य में मानव-मन के भावों तथा अनुभूतियों का स्वच्छंद विचरण होता है। सामान्य जन की पीड़ा, जिजीविषा, हर्ष, संवेदना आदि कोमल मनोभावों का दीर्घकालिक प्रवाह लोक साहित्य के माध्यम से होता है। हिंदी साहित्य कोश में यह उल्लेख किया गया है कि "लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है जो जनता द्वारा, जनता के लिए लिखा गया हो।" लोक साहित्य में सहज, स्वाभाविक शब्दों के माध्यम से की गयी अभिव्यक्ति किसी नदी की अविरल धाराप्रवाह की भाँति एक पीढ़ी से परवर्ती पीढ़ियों में संवाहित होती रहती है। इसकी कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है। लोक साहित्य की प्रासंगिकता सदैव बरक़रार रहती है। डॉ. सत्येंद्र अपनी पुस्तक 'ब्रज-लोक-साहित्य का अध्ययन' में लोक साहित्य के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि "लोकवार्ता-साहित्य का मूल्य केवल साहित्य की दृष्टि से उतना नहीं होता, जितना उनमें सुरक्षित उन परंपराओं की दृष्टि से होता है जो नृ-विज्ञान के किसी पहलू पर प्रकाश डालतीं हैं। इस साहित्य को आदिम मानव की आदिम प्रवृत्तियों का कोष कह सकते हैं।"

लोक साहित्य का जन्म स्वतः हो जाता है। मानव जीवन में सुख अथवा दुःख की अधिकता होने पर उस दौरान प्राप्त अनुभूतियों को भाषिक प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करने का सामर्थ्य एक विलक्षण गुण है। आदिम मानव ने तत्कालीन दौर में अपनी संवेदनाओं तथा

अनुभवों को शब्दों में गूँथकर कलात्मक अभिव्यक्ति की है। आदिम मानव के इस साहित्य में प्रकृति के साथ प्रगाढ़ संबंध की सहज अनुभूति होती है। विशिष्ट लय, मादकता, रागात्मकता के साथ लोक साहित्य में सन्निविष्ट मनोवैज्ञानिक भाव अविच्छिन्न गति से प्रवाहित होती हुई सर्वत्र व्याप्त हुई है।

सामान्य जन द्वारा भावनाओं को विषयवस्तु बनाकर गीत, कथा, गाथा, सुभाषित आदि विधाओं के माध्यम से की गयी इस सृजनात्मक अभिव्यक्ति की मौखिक परंपरा रही है। हालाँकि अब इसे लिपिबद्ध करने का प्रयास किया जाने लगा है। लोक साहित्य अनेक रचनाकारों की सामूहिक अभिव्यक्ति है। ऐसा कहा जा सकता है कि इन रचनाओं के प्रारंभिक दौर में किसी व्यक्ति ने एक-आध पंक्ति रचकर पहल की होगी।

आगे उसी समुदाय के अलग-अलग लोगों ने कुछ और अनुभवजन्य पंक्तियाँ जोड़कर रचना को आगे बढ़ाया होगा। इस प्रकार पीढ़ियों से एक कंठ से दूसरे कंठ तक प्रतिध्वनित होती हुई ये हस्तांतरित हुई और क्रमशः परिवर्तित भी होती रहीं। जनसमूह द्वारा आपसी सहयोग से रचे गये लोक साहित्य में जीवन का कोई अंश अछूता नहीं रह पाता है। लोक साहित्य में किसी भी समुदाय की आदिम अवस्था से लेकर वर्तमान समय की बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विचारोत्कर्ष का सम्पूर्ण भान होता है। धर्म के संबंध में तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में यह चौपाई कही है -

'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

प्रभु को जिसने जिस रूप में सोचा, जिस व्यक्ति की भावना जैसी रही उसने अपने मन में उसी के अनुसार ईश्वर की छवि स्थापित कर ली.... रामचरित मानस के बालकांड से ली गई यह चौपाई बहुत खूबसूरत महत्व रखती हैं।

भारत की पुण्यभूमि पर समय-समय में ऐसे कई महान साधु-संत हुए हैं, जिनके अवतरण से विश्व का उद्धार हुआ है। जिनके उपदेशों और विचारों ने भारतीय जनमानस के साथ-साथ विश्वभर के असंख्य लोगों का मार्गदर्शन किया है। प्रेमानंद जी महाराज के अनमोल विचारों ने समाज को धर्म का मार्ग दिखाया है, जिनके उपदेश असंख्य लोगों के जीवन में सुख-शांति की

स्थापना करते हैं। उनके विचार जीवन के गहरे पहलुओं को समझने के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं, साथ ही उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से न केवल आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझाया, बल्कि मानवता, प्रेम और शांति की दिशा में भी समाज का मार्गदर्शन किया।

लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक धरोहर का जीवंत दस्तावेज होता है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से स्थानांतरित होता आया है और विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारधाराओं को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

लोक साहित्य में भक्ति, अध्यात्म और धार्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति कविता, लोकगाथाओं, लोकगीतों, कहानियों, कहावतों और मुहावरों के माध्यम से होती है। लोक साहित्य में धर्म केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह समाज की नैतिकता, आचार-विचार, जीवन-दृष्टि और आध्यात्मिक अनुभवों का भी समावेश करता है। विभिन्न धर्मों के संतों, भक्तों और प्रवर्तकों ने अपने संदेशों को लोक साहित्य के माध्यम से ही प्रचारित किया। भक्ति आंदोलन के समय संत कवियों ने आध्यात्मिकता को आम जनमानस तक पहुँचाने के लिए सरल भाषा का प्रयोग किया। कबीर, तुलसीदास, मीरा, रहीम, सूरदास आदि ने अपने काव्य में भक्ति और आध्यात्मिकता का प्रचार किया। लोक कथाओं में धर्म और आध्यात्मिकता के तत्व नीतिपरक कहानियों, चमत्कारिक घटनाओं और नैतिक आदर्शों के रूप में प्रकट होते हैं। पंचतंत्र, जातक कथाएँ, वीर गाथाएँ, लोक देवताओं की कथाएँ आदि इसका उदाहरण हैं। लोक साहित्य केवल किसी एक धर्म तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह विभिन्न धार्मिक धाराओं में सामंजस्य स्थापित करने का कार्य भी करता है। कबीर और दादू दयाल जैसे संतों ने हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया, जबकि सिख गुरुओं ने लोक भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार किया।

लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का अभिन्न अंग होता है। इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य, मुहावरे, कहावतें आदि शामिल होते हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से संचारित होते रहते हैं।

धर्म के संदर्भ में लोक साहित्य का महत्व कई पहलुओं में देखा जा सकता है: लोक साहित्य के माध्यम से धार्मिक मूल्यों, आस्थाओं और नैतिक आदर्शों का प्रचार-प्रसार होता है।

लोककथाएँ और गाथाएँ धार्मिक आदर्शों को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे जनसामान्य तक आसानी से पहुँचती हैं। लोकगीतों और लोकगाथाओं में धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों और देवी-देवताओं से जुड़ी कथाएँ संजोई जाती हैं। ये परंपराएँ समाज में धर्म को जीवंत बनाए रखने में सहायक होती हैं। उदाहरण के लिए, लोक साहित्य विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने में सहायक होता है। इसमें विभिन्न धर्मों के विचारों, मान्यताओं और रीति-रिवाजों का समावेश होता है, जिससे पारस्परिक सद्भाव और सहिष्णुता को बढ़ावा मिलता भक्ति साहित्य में संतों की वाणी, कीर्तन और भजन लोगों को आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करते हैं। लोक साहित्य विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने में सहायक होता है। इसमें विभिन्न धर्मों के विचारों, मान्यताओं और रीति-रिवाजों का समावेश होता है, जिससे पारस्परिक सद्भाव और सहिष्णुता को बढ़ावा मिलता है। लोक साहित्य धर्म से जुड़ी कथाओं को आम जनमानस की भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे वे आसानी से समझी जा सकती है।

जिससे पारस्पारक सद्भाव आर साहष्णुता का बढ़ावा मिलता है। लोक साहित्य धर्म से जुड़ी कथाओं को आम जनमानस की भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे वे आसानी से समझी जा सकें। जैसे- तुलसीदास की रामचरितमानस और सूरदास के भजन लोकभाषा में होने के कारण जनसाधारण के बीच लोकप्रिय हुए।

लोक साहित्य धार्मिक स्थलों, देवताओं और चमत्कारों की कथाएँ सुनाकर लोगों की आस्था को बनाए रखता है। जैसे-राजस्थान में पाबूजी की फड़, पश्चिम बंगाल में चंडीमंगल काव्य, और मध्य भारत में पंडवानी गायन धार्मिक कथाओं को जन-जन तक पहुँचाते हैं।

आध्यात्मिकता

आध्यात्मिकता का किसी धर्म, संप्रदाय या मत से कोई संबंध नहीं है। आप अपने अंदर से कैसे हैं, आध्यात्मिकता इसके बारे में है। आध्यात्मिक होने का मतलब है, भौतिकता से परे जीवन का अनुभव कर पाना। अगर आप सृष्टि के सभी प्राणियों में भी उसी परम-सत्ता के अंश को देखते हैं, जो आपमें है, तो आप आध्यात्मिक हैं। अध्यात्म एवं धर्म की सत्ता चारो युगों में स्थापित रही है। जीव भौतिक जगत का अंश नहीं अपितु ईश्वर का अंश है इसे स्वीकार करना ही

अध्यात्म है। इसलिए जीव का स्वभाव अध्यात्मिक है जबकि शरीर का स्वभाव भौतिक है। शरीर जीवात्मा पर निर्भर है और जीवात्मा शरीर को त्याग देता है तब शरीर का कोई महत्त्व नहीं रह जाता। जगत में समस्त जीव-जंतु को ईश्वर का अंश अर्थात एक समान माना गया है। आध्यात्मिक जगत में किसी भी योनि में जन्म लिए शरीर को असत्य एवं अस्थाई माना गया है क्योंकि शरीर की मृत्यु निश्चित है परंन्तु जीवात्मा की मृत्यु कभी हो नहीं सकती।

निष्कर्ष

लोक साहित्य धर्म और आध्यात्मिकता को जनसाधारण तक पहुंचाने का एक प्रभावी माध्यम है यह न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का संचार करता है, बल्कि समाज में नैतिकता सहिष्णुता और सद्भाव को भी मजबूत करता है।

लोक साहित्य में धर्म और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति बहुआयामी है। यह न केवल धार्मिक मूल्यों का प्रचार करता है, बल्कि समाज को नैतिकता और सहिष्णुता का पाठ भी पढ़ाता है। लोक साहित्य के माध्यम से आम जनमानस को धर्म की गूढ़ बातों को सरल और प्रभावी ढंग से समझाया जाता है। इस प्रकार, लोक साहित्य में आध्यात्मिकता केवल ईश्वर-भक्ति तक सीमित न रहकर जीवन के उच्च आदर्शों को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोस्वामी तुलसीदास सन् 1574 (संवत् 1631) "रामचरितमानस" गीता प्रेस वाराणसी से प्रकाशित।
2. कुमार, मोहन (2012) "लोकगीतों में धार्मिक तत्व" वर्मा सुरेश (संपादक) लोक साहित्य के विविध आयाम जयपुरः साहित्य सदन।
3. गुप्ता, अनिल (2020) "लोक साहित्य में आध्यात्मिकता" सहित ऑनलाइन ।
4. सिंह, राम (2010) "लोक साहित्य की परंपरा" नई दिल्ली साहित्य प्रकाशन।